दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) ..............

# उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

125-130 V.good

नाम (Name) Shailendra Kumar Singh विषय (Subject) Essay तिथि (Date) 13/09/2009

पता (Address ............... फोन नंबर ( मोबाइल )......

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विज्ञान - तकनीक के विकास ने मानव की संवेदनाओं को कमजोर बना दिया है →

'विज्ञान - तकनीक' शब्द सुनते ही सुविधाओं से भरी दुनिया हमारी आँखों के सामने आ जाती है जिसमें सर्दी - गर्मी से बचने के लिए एयर कंडीशनर हैं; परिवहन के लिए कारें, ट्रेनें, हवाईजहाज इत्यादि हैं; ऊँची अट्टालिकाएँ, मॉल्स हैं; संचार के लिए मोबाइल फोन, इन्टरनेट आदि हैं; मनोरंजन के लिए टेलीविजन, थियेटर, वाटरपार्क आदि हैं; विभिन्न बीमारियों, समस्याओं के समाधान उपलब्ध हैं तथा भविष्य में भी नई - नई सुविधाओं तथा विभिन्न समस्याओं के समाधान होने की आशा जगती है। आज विज्ञान-तकनीक के बिना जीवन की कल्पना भी मुश्किल लगती है।' किंतु क्या विज्ञान - तकनीक ने हमें सिर्फ सुविधाएँ दी हैं? क्या उसके नकारात्मक परिणाम नहीं हैं? क्या इसने कई मनुष्यों का जीवन दुरुह नहीं बनाया है? क्या इसने असमानता को बढ़ाने में मदद नहीं की है? क्या इसने आतंकवाद व युद्ध की भयावहता को बढ़ा नहीं दिया है? क्या इसने मानवीय संवेदनाओं को कमजोर नहीं किया है? इन्हीं जटिल प्रश्नों के आलोक में विज्ञान - तकनीक के मानवीय - संवेदनाओं पर पड़े प्रभाव को देखने का प्रयास कर सकते हैं।

सर्वप्रथम विज्ञान - तकनीक द्वारा उपलब्ध कराये गये विभिन्न उपकरणों पर विचार कर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कर सकते हैं। जैसे- मोबाइल फोन, आईपॉड आदि उपकरणों ने मनुष्य को अपने आप में ही मस्त बना दिया है। वे संगीत सुनते हुए ही सार्वजनिक स्थानों पर देखे जा सकते हैं। इससे सामाजिक अन्तःक्रिया की संभावना कम हुई है तथा दूसरों के प्रति संवेदना में कमी आयी है। टेलीविजन, इण्टरनेट आदि सुविधाओं ने व्यक्ति के खाली समय को अपनी ओर खींच लिया है जिसमें पहले लोग सामूहिक अन्तःक्रिया करते थे, पड़ोसी से मिलते थे आदि परंतु अब इन्हीं उपकरणों पर समय बीतता है। इसने तो परिवार के सदस्यों तक को दूर कर दिया है। इण्टरनेट पर अधिक समय बिताने वाले पतियों की पत्नियों के लिए 'इण्टरनेट विधवा' शब्द प्रयुक्त होने लगा है। बच्चे भी अब बाहर दूसरे बच्चों के साथ खेलने या दादा-दादी, नाना-नानी से कहानियां इत्यादि सुनने के बजाय कम्प्यूटर गेम्स खेलना अधिक पसंद करते हैं।

विज्ञान-तकनीक ने विभिन्न सुख-सुविधा के उपकरणों का निर्माण करके व्यक्ति को आरामतलब बनाया है तथा इन सुविधाओं के उपभोग की प्रवृत्ति को बढ़ा दिया है। इसने सुविधाओं की प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा को बढ़ाकर सामाजिक तनाव व संवेदनहीनता को बढ़ाया है। इनकी प्राप्ति के लिए व्यक्ति किसी भी हद तक जाने को तैयार है, दूसरे व्यक्ति की कीमत पर भी वह इसे प्राप्त करने को व्याकुल है।

विज्ञान-तकनीक के प्रभाव से वैज्ञानिक मूल्यों को बढ़ावा मिला है जिन्होंने हर चीज को तार्किकता की कसौटी पर कसने को प्रेरित किया है। इससे मानवीय संवेदनाओं, भावनाओं का महत्व कम हुआ है। व्यक्ति तार्किकता का दास बनता जा रहा है। इस

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishtiacademy@gmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्थिति को प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने 'तार्किकता के लौह पिंजड़े' के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रसिद्ध आधुनिकतावादी चिंतक जिग्मुट बाउमैन ने विज्ञान-तकनीक के विकास को व्यापक हिंसा को संभव बनाने के सहायक कारण के रूप में भी प्रस्तुत किया है। इनके अनुसार हिटलर द्वारा लाखों यहूदियों का जनसंहार विज्ञान-तकनीक के माध्यम से ही संभव हुआ। गैस चैम्बर में एक साथ बड़ी संख्या में लोगों को मार सकने में विज्ञान की भूमिका स्पष्ट है। तलवार इत्यादि से जनसंहार की तुलना में विज्ञान-तकनीक के उपयोग द्वारा व्यक्तियों को मारना तुलनात्मक रूप से आसान होता है। विज्ञान-तकनीक के कारण ही व्यापक जनसंहार के हथियार (WMD) विकसित हुए हैं तथा युद्ध की भयावहता बढ़ी है। इसी के कारण आतंकवाद जैसी समस्या अधिक जटिल व खतरनाक हुई है। अब तो मानवरहित बमवर्षक विमान भी बन गए हैं जो कहीं भी व्यापक जनसंहार कर सकते हैं। ये सभी मानवीय संवेदनशीलता की कमी के ही परिचायक हैं।

विज्ञान-तकनीक के कारण मशीनीकरण व स्वचालनीकरण ने मनुष्य के श्रम के महत्व में कमी लाई है। भविष्य में कम्प्यूटर रोबोट आदि का प्रयोग बढ़ने से इसमें और कमी आ सकती है। हेनरी ब्रेवरमैन ने इसे 'डीस्किलिंग' की संज्ञा दी है। दूसरी ओर मशीनों व उपकरणों की संख्या बढ़ने से मनुष्य में अलगाव भी उत्पन्न हुआ है। मशीनीकरण से उत्पन्न अलगाव के इस पक्ष को कार्ल मार्क्स ने बखूबी उठाया है तथा अच्छा विवेचन किया है। इससे मनुष्य प्रकृति, दूसरे मनुष्यों यहाँ तक कि

स्वयं से भी दूर हो जाता है। यह मानवीय संवेदनाओं की कमी की चरम अभिव्यक्ति कही जा सकती है।

इसके अलावा विज्ञान-तकनीक के प्रसार ने विकास की होड़ को तेज किया है। आज सभी देश विकास के लिए प्रकृति का दोहन करना चाहते हैं तथा अधिक से अधिक वस्तुओं, सेवाओं को उपलब्ध कराना चाहते हैं। इस होड़ ने मनुष्य की पर्यावरण के प्रति संवेदनाओं को कम किया है तथा पर्यावरण-संकट उत्पन्न किया है।

वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति ने औद्योगीकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया है। इससे नगरीकरण की प्रक्रिया भी बढ़ी है जिसने स्लमस को उत्पन्न किया है जहाँ व्यक्ति बहुत ही अमानवीय दशाओं में जीने को मजबूर होता है। कुछ उद्योगपति इन स्लमस को उजाड़कर मॉल्स, फैक्ट्री इत्यादि स्थापित करते हैं जो मानवीय संवेदनहीनता का ही द्योतक है।

आज वैज्ञानिक व तकनीकी विकास के ही उत्पाद मीडिया ने समाज को भीड़ समाज में बदल दिया है जिसमें सभी लोग भेड़ की तरह एक ही दिशा में बिना सोचे-विचारे चले जा रहे हैं। मीडिया ने उपभोक्तावादी संस्कृति को सभी लोगों में विकसित करके समरूपता उत्पन्न की है। इससे लोगों के अलग व्यक्तित्व, संवेदनाओं, सोच आदि में कमी आयी है। मानव संवेदनहीन हो गया है।

विभिन्न संचार उपकरणों ने मानवीय संबंधों में पायी जाने वाली संवेदनशीलता व गर्माहट को कम किया है तथा औपचारिकता व फूहड़ता को बढ़ाया है। विभिन्न विज्ञापनों,

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मीडिया ने स्त्री का वस्तुकरण करके उसके व्यक्तित्व व संवेदनाओं के महत्व को कम किया है।

किंतु यह सिक्के का एक ही पहलू है, अभी सिक्के का दूसरा पहलू देखा जाना बाकी है अर्थात् विज्ञान - तकनीकी ने मानवीय संवेदनाओं में केवल कमी ही नहीं लाई है, कई क्षेत्रों / मामलों में इसने मानवीय संवेदनशीलता को बढ़ाया भी है। इसे हम अगले कुछ पैराग्राफों में देखने का प्रयास करेंगे।

विज्ञान तकनीकी द्वारा विकसित विभिन्न संचार उपकरणों ने मनुष्य को अपनी संवेदनाएँ व्यक्त करने का अवसर भी दिया है। इसने दूरी व समय की बाध्यता को बेमानी बना दिया है। माँ, बेटे के दूर होने पर भी इससे जब चाहे बात कर सकती है। अब तो 3G प्रौद्योगिकी आने से मोबाइल फोन पर तस्वीर भी देखी जा सकती है। इसने पति - पत्नी, प्रेमी - प्रेमिका, दोस्तों आदि को पास ला दिया है तथा अपनी संवेदनाएँ कभी - भी, किसी से भी व्यक्त करने की सुविधा प्रदान की है।

आज इन्टरनेट ने तो ब्लॉग रूपी ऐसी सुविधा प्रदान की है कि व्यक्ति अपनी ऐसी संवेदनाओं को भी प्रकट कर सकता है जिन्हें पहले वह किसी के सामने व्यक्त नहीं कर सकता है। किसी भी विषय पर अपने विचारों को ब्लॉग के माध्यम से रखा जा सकता है। यह विज्ञान - तकनीक के द्वारा ही संभव हो सका है।

विभिन्न किचिन उपकरणों जैसे - मिक्सर, ओवन इत्यादि ने महिलाओं के काम को आसान कर दिया है। वाशिंग मशीन ने महिलाओं के श्रम व समय दोनों की बचत की है। इससे

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महिलाओं को खाली समय मिला है ताकि वे अपने व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान दे सकें। समाज में सन्तक्रिया कर सकें वरना पहले तो सारा समय विभिन्न घरेलू कार्यों में ही खर्च हो जाता है। इससे महिलाओं को भी समाज का सक्रिय सदस्य बनने का मौका मिला तथा उनकी संवेदनाओं को व्यक्त होने का अवसर मिल सका।

आज मनुष्य अपने सुखद व भावनात्मक पलों को कैमरे या डिजिटल कैमकॉर्डर में रिकॉर्ड कर सकता है। चित्र या चलचित्र किसी भी माध्यम में अपनी यादों को सुरक्षित किया जा सकता है। इससे व्यक्ति अपनी यादों को सहेजकर रख सकता है तथा तनाव के समय इन्हें देखकर भावनात्मक संतुष्टि प्राप्त कर सकता है। यह मानवीय संवेदना के क्षेत्र में विज्ञान - तकनीक का बहुत बड़ा उपहार है।

पहले दलित या अछूत लोगों को साफ सफाई के कार्य, मैला ढोना आदि कार्य स्वयं करने पड़ते थे। इससे इनकी गरिमा का ह्रास होता था। आज विज्ञान - तकनीक ने कृत्रिम शौचालय प्रदान करके मैला ढोने की बाध्यता को खत्म किया है। विभिन्न सफाई उपकरण भी विज्ञान की ही देन हैं। शहरों में सीवर की सफाई के लिए मशीनें आ गई हैं। इन्होंने इस काम को आसान करके मानवीय गरिमा में वृद्धि की है।

मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति में बाधक कारकों को दूर करने में भी विज्ञान-तकनीक का महत्व है। अंधे व्यक्ति में आँखों का प्रत्यारोपण करके, अपंग व्यक्ति में कृत्रिम पैर लगाकर, कम सुनने वाले

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishtiacademy@gmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यक्ति की क्षमता बढ़ाकर संवेदनाओं के व्यक्तीकरण को संभव बनाया है। ऐसे उपकरण भी बन रहे हैं जिनके माध्यम से मस्तिष्क की तरंगों को पढ़कर विभिन्न कार्य संभव हो सकेंगे। इण्टरनेट पर कार्य करना हाथविहीन, लकवाग्रस्त आदि लोगों के लिए भी संभव होगा। इसका एक उदाहरण स्टीफन हाकिंग जैसे वैज्ञानिक जिनका शरीर लगभग पूर्णतः लकवाग्रस्त है द्वारा प्रयुक्त उपकरणों के रूप में देखा जा सकता है।

मीडिया ने विभिन्न समस्याओं, सामाजिक कुरीतियों, अपराधों आदि के प्रति लोगों को संवेदनशील भी बनाया है हालांकि इसके उदाहरण कम हैं परंतु प्रयास जारी है। 'कलर्स' नामक एक चैनल ने बाल विवाह और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों पर आधारित धारावाहिक बनाकर समाज के लोगों को इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास किया है जो कि सराहनीय है। पोलियो अभियान को सफल बनाने के लिए विज्ञापन 'दो बूंद जिंदगी की'; शिक्षा के प्रति प्रेरित करने के लिए 'स्कूल चलें हम', 'पढ़ना लिखना सीखो...', मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए चलाया गया 'पप्पू अभियान' आदि समाज में संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए ही चलाये गये हैं।

विज्ञान-तकनीक ने ही विश्व के विभिन्न देशों को जोड़कर वैश्विक समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता बढ़ायी है। लोगों के विचारों को पूरे विश्व स्तर पर फैलने का मौका दिया है। यह सब कुछ विज्ञान तकनीक के विकास के कारण ही संभव हो सका है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि विज्ञान तकनीक ने निःसंदेह मानव की संवेदनाओं को कमजोर किया है तथा विभिन्न समस्याओं को उत्पन्न किया है। परंतु इसके सकारात्मक पक्षों को देखते हुए आशा जगती है कि विज्ञान-तकनीक में संवेदनाओं को बढ़ाने की भी शक्ति मौजूद है। हमारा कर्त्तव्य सिर्फ यह है कि इसके सकारात्मक पक्ष को और मजबूत करें तथा नकारात्मक पक्ष को कम करने का प्रयास करें। वरना कहीं ऐसा न हो कि विज्ञान-तकनीक का अंधाधुंध विकास मानवीय समाज को ऐसी स्थिति में ले जाकर खड़ा कर दे जहां मानव मशीनों की दुनिया के सामने मजबूर खड़ा हो, जहां मानवीय संवेदनाओं का महत्व ही न रहे। ~~यदि ऐसा हुआ कि~~

125-130

V. Good.

- उदाहरण और बढ़ा देते तो बेहतर।
- भाषा के प्रभावपूर्ण होने की ओर संकेत है

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishtiacademy@gmail.com

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जहां गर्मी से बचने के लिए AC है, परिवहन के लिए कारें, रेलवे, प्लेन आदि हैं, संचार के लिए मोबाईल, इंटरनेट हैं, मनोरंजन के विभिन्न साधन टेलीविजन, थियेटर आदि हैं, तथा चिकित्सा के भी नई नई सुविधा व नई जानकारियाँ की आशा है।

विज्ञान–तकनीक शब्द सुनते ही सुविधाओं से भरी दुनिया सामने आ जाती है, हम सोचते हैं अगर विज्ञान तकनीक न होती तो हम कहाँ होते, वही प्राकृतिक आपदाओं से जूझते, प्रकृति से लड़ते अभावग्रस्त समाज

आज विज्ञान तकनीक के बिना जीवन की कल्पना मुश्किल लगती है किंतु क्या विज्ञान तकनीक ने हमें सिर्फ सुविधायें ही दी हैं? क्या इसके नकारात्मक परिणाम नहीं हैं? क्या इसने कई मनुष्यों का जीवन दुरूह नहीं बनाया है? क्या इसने असमानता को बढ़ाने में मदद नहीं की है? क्या इसने मानवीय संवेदनाओं को कमजोर नहीं किया है? इन्हीं प्रश्नों के आलोक में हम विज्ञान तकनीक के मानवीय संवेदनाओं पर पड़े प्रभाव को देखने का प्रयास कर सकते हैं?

क्या इसने आतंकवाद व युद्ध की भयावहता को बढ़ा नहीं दिया है?

–

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जिंगगुर बाउमैन — विज्ञान- तकनीक → फालीनार नाजियों की हत्या
✓ आरामतलब, टीवी, सामा-जन्तादिया को कम किया
✓ आईपॉड, मोबाइल, इंटरनेट, ईटनो मिडी
उत्पादी — ✓ उपभोक्तावादी
वैज्ञानिक मूल्य → ✓ अत्यधिक तार्किक — संवेदनाओं का ह्रास
→ मशीनीकरण — अलगाव
✓ सुविधाओं का मारी → प्रतिस्पर्धा बढ़ी
→ हथियार → आतंकवाद
✓ विकास की ओर पर्यावरण के प्रति असंवेदनशील
✓ विज्ञान क्रांति → औद्योगीकरण → slums —
✓ मीडिया — भीड़ समाज — मौनी हाउजर

सकारात्मक —

✓ कियन, गर्भ निरोधन, महिलाओं को लाली समय, व्यक्तित्व, संवेदनाओं को महत्व
✓ अपनी संवेदनाओं को कभी भी प्रकट करने का माध्यम मोबाईल
✓ अपनी संवेदनाओं बाटें किसी से नहीं', ब्लॉग
✓ कविता, चित्र, वीडियो, पुराने समय, अच्छी यादों को —
✓ Video - chatting 3G - लाइव बात -
✓ शौचालय → मैला ढोने से छुटकारा → लोगों की संवेदनाओं को महत्व
✓ तकनीक → सारने . अपनी संवेदनाओं को व्यक्त कर सके
✓ विभिन्न समस्याओं, कमियों को जानने लायक जागरूकता, संवेदनशीलता बढ़ी है।

5/10



पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishtiacademy@gmail.com